+ उपन्यास 'कला' की दृष्टि में 'गोदान' की समीक्षा :— +

प्राय: सभी आलोचकों का यह मत है कि 'गोदान' प्रेमचंद के उपन्यासों की शीर्षमणि है। इसमें प्रेमचन्द की उपन्यास-कला अपने पूरे वैभव के साथ प्रकट हुई है। :—

1 कथानक :- इसमें कथाएँ दो साथ-साथ चलती हैं। ग्रामीण जीवन से सम्बन्धित और नागरिक जीवन से सम्बन्धित। इन दोनों कथाओं की सम्बन्ध-स्थापना रायसाहब और गोबर द्वारा होती है। रायसाहब के यहाँ रामलीला देखने के लिए नगर के सम्भ्रान्त व्यक्ति आते हैं और गोबर मजदूर बनकर शहर जाता है और वहाँ इन लोगों के सम्पर्क में आता है। इस प्रकार ये दोनों कथाएँ एक-दूसरे से मिल जाती हैं। प्रेमचंद 'गोदान' में भारतीय समाज का समग्र चित्र उतारना चाहते थे, जिसका प्रमुख भाग गाँवों में बिखरा पड़ा है। उन्होंने इसमें किसानों के होने वाले उस शोषण का चित्रण किया है जिसे प्रत्यक्ष रूप से तो जमींदार करते हैं और अप्रत्यक्ष रूप से नगर वाले। प्रेमचन्द अगर नागरिक कथा को न लाते तो शोषण के इस चक्र का यह चित्र अधूरा ही रह जाता। ग्रामीण जीवन नगरीय जीवन की तुलना में अधिक सुन्दर, पवित्र और सादा होता है। नगरों में विलास है इसलिए पाप है, यही सारी बातें दिखाने के लिए 'गोदान' में नागरिक कथा को जोड़ना कला एवं उद्देश्य की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था और वही प्रेमचंद ने किया।

2.) चरित्र-चित्रण :— इसके पात्र कठपुतली न होकर रक्त माँस के बने सजीव व्यक्ति हैं। पात्रों के चरित्र में सर्वत्र एक गतिशीलता है, वे स्थिर नहीं हैं। यद्यपि उपन्यास का नायक होरी है परन्तु यहाँ प्रत्येक पात्र आदर्श है और अपने अपने क्षेत्र में महत्वपूर्ण जैसे — धनिया, मालती, मेहता, सिलिया आदि। इसके सभी पात्र मानव हैं लोकोत्तर प्राणी नहीं।

होरी भारतीय किसान का मूर्तिमान सजीव पात्र है, भारतीय किसान की समस्त विषमता का वह जीवन्त प्रतिनिधि है। महाजनों का एक पूरा दल, मातादीन झिंगुरी सिंह, रायसाहब, पुलिस, पंच आदि सभी उसे चूसते हैं। होरी की पत्नी धनिया ऊपर से बादाम की तरह कठोर पर हृदय से मक्खन के समान कोमल है। वह होरी की तरह अन्याय और अत्याचार को बिना विरोध किये नहीं सह सकती। अन्य स्त्री पात्रों में मुनिया, सिलिया आदि आकर्षक हैं। सिलिया समाज की दुर्व्यवस्था की शिकार है। जाति से चमार होने पर भी आदर्श सती है। नागरिक स्त्री पात्रों में मिस मालती, मिसेज खन्ना दोनों के चरित्र पूरे उतरे हैं। मिसेज खन्ना प्राचीन आदर्शों की नारी हैं वहीं मालती नवयुग की साक्षात् प्रतिमा है। वह खन्ना को खूब उल्लू बनाती है। ग्रामीण सुधार में मेहता का साथ देती है फिर देवी बन जाती है। अन्य पुरुष पात्रों में प्रोफेसर मेहता का चरित्र आकर्षक है। मौका पड़ने पर वे रायसाहब और खन्ना को उनकी मक्कारी और धन लिप्सा के लिए खूब फटकारते हैं। मालती उनके संपर्क में आकर तितली से त्यागमयी नारी बन जाती है।

गोबर एक अनपढ़ और उग्र विचारों वाला युवक है। वह अत्याचार को सहन न कर सकने के कारण नगर को भाग जाता है, किन्तु वहाँ से भी निराश होकर अंत में गाँव लौट आता है। वह नगर से अनेक बुराइयाँ भी सीखकर आता है। मातादीन का चरित्र कला की दृष्टि से बड़ा सुन्दर है। यह निर्मम कठोर, स्वार्थी, लोलुप युवक धीरे-धीरे बदल कर सिलिया का तप सफल कर देता है। जो अपना धर्म पाले वही ब्राह्मण, जो धर्म से मुँह मोड़े वही चमार है। ओंकारनाथ खद्दरधारी ढोंगी सम्पादक है। तंखा गिरगिट की तरह रंग बदलनेवाले वकीलों का एजेंट है। मिर्जा खुर्शेद अली फक्कड़ और मनमौजी है। ग्रामीण पात्रों में बिसेसरसाह, दुलारी, मँगरू साह, झिंगुरीसिंह, दातादीन, नोखेराम आदि सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।

D.T.O.

3. कथोपकथन :- कथोपकथन की दृष्टि से भी गोदान एक उत्कृष्ट कलाकृति प्रमाणित होता है। इसके कथोपकथन सर्वत्र सजीव, पात्रानुकूल चरित्र को स्पष्ट करने वाले और कथा को गति देने वाले हैं। सोना और रुपिया के नन्द-भाभी के मजाक तथा झिंगुरीसिंह की नकल के कथोपकथन मनोरंजक हैं। झुनिया और गोबर के रोमांस से संबंधित वार्तालाप भी पर्याप्त सरस और मार्मिक है।

4. वातावरण :- पात्रों के अनुकूल वातावरण की सृष्टि करने में तो प्रेमचंद अद्वितीय हैं। सोना का पति मथुरा और सिलिया चमारिन जब अँधेरे में मिलते हैं तो उस समय का चित्रण - " बरोठे में अँधेरा था। उसने सिलिया का हाथ पकड़कर अपनी ओर खींचा --- सिलली का मुँह उसके मुँह के पास आ गया था और दोनों की साँस और आवाज और देह में कम्प हो रहा था।" "लू चल रही है, बगूले उठ रहे हैं, धरती तप रही है मगर किसान अपने खलिहान में कार्यरत हैं कहीं मड़ाई हो रही है, कहीं अनाज ओसा जा रहा है।" "कोने में तुलसी का चबूतरा है, दूसरी ओर जुआर के कई ओझ दीवार के सहारे रखे हैं। ग्रामीण जीवन के ऐसे चित्र उतारना प्रेमचंद की ही कलम का काम था, क्योंकि उन्होंने ये चित्र कल्पना से न गढ़कर आँखों से देखकर खींचे थे।

5.) भाषा-शैली :- भाषा के क्षेत्र में तो प्रेमचन्द सम्राट हैं। उनकी भाषा सरलता, सौंदर्य, व्यंग्य और प्रवाह के कारण आदर्श मानी जाती है। वह तीखी, पैनी तथा मर्म पर प्रभाव डालने वाली होती है। गोदान की भाषा में एक नया रस लचक और यौवन-सा आ गया है। यह अधिक परिष्कृत, मधुर और साहित्यिक हो जाती है। - " वह अभिसार की मीठी स्मृतियाँ याद आईं। जब वह अपने उन्मत्त उच्छ्वासों में, अपनी नशीली चितवनों में मानो अपने प्राण निकाल कर उसके चरणों पर रख देता था। झुनिया किसी वियोगी पक्षी की भाँति अपने छोटे से घोंसले में एकांत जीवन काट रही थी। वहाँ नर का मत्त आग्रह न था, न वह उद्दीप्त उल्लास, न शावकों की मीठी आवाजें, मगर बहेलिये का जाल और छल भी तो वहाँ न था।"

D.T.O.

भाषा के गाम्भीर्य का एक उदाहरण :- " वैवाहिक जीवन के प्रभात में लालसा अपनी गुलाबी मादकता के साथ उदय होती है और हृदय के सारे आकाश को अपने माधुर्य की सुनहरी किरणों से रंजित कर देती है। फिर मध्याह्न का प्रखर ताप आता है, क्षण-क्षण पर बगूले उठते हैं और पृथ्वी काँपने लगती है। लालसा का सुनहरा आवरण हट जाता है और वास्तविकता अपने नग्न रूप में सामने आ खड़ी होती है। उसके बाद विश्रामकारी संध्या आती है, शीतल और शान्त, जब हम थके हुए पथिकों की भाँति दिन-भर यात्रा का वृतान्त कहते हैं और सुनते हैं, तटस्थ भाव से मानो हम किसी ऊँचे शिखर पर जा बैठे हैं; जहाँ नीचे का जन-रव हम तक नहीं पहुँचता।"

'गोदान' की इन्हीं विशेषताओं को देखकर प्रकाशचन्द्र गुप्त ने मुक्त कर कंठ से प्रेमचंद की महानता को स्वीकार करते हुए लिखा है कि- "गोदान में प्रेमचन्द ने उत्कृष्ट कलाकार के सभी गुण दर्शाये हैं। इसकी शैली प्रौढ़ है, पात्र सच्चे और सजीव हैं। ग्राम्य जीवन को खूब समझते हैं। उसकी रचना में गम्भीरता और सरलता है। 'कायाकल्प' के बाद जो उनका पतन हुआ था, उसका प्रतिकार इन्होंने कर दिया। अपने पुराने गौरवमय स्थान पर वे लौट आये। कुल मिलाकर 'गोदान' प्रेमचंद की अचल कीर्ति का स्मारक है।